E-Content

Master of Arts (History)

Darbhanga House, Patna University, Patna-800005

Semester-II

Course Code-CC-VI

Course Name: (History of Europe & Modern World 1919-2000)

Unit-IV

द्वितीय विश्वयुद्ध-परिणाम

अविनाश कुमार

सहायक प्रोफेसर -इतिहास

पटना कॉलेज, पटना

6202393206 & avinashisavailable@gmail.com

- द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणाम प्रथम विश्वयुद्ध से अधिक निर्णायक हुए। इसके सिर्फ विनाशकारी प्रभाव ही नहीं हुई, बल्कि कुछ प्रभाव ऐसी भी है जिससे विश्व इतिहास की धारा बदल गई तथा एक नए विश्व का उदय और विकास हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध के निम्नलिखित परिणाम हुए:

धन-जन का व्यापक नाश

- इस युद्ध की जो सबसे बड़ी हानि सामने आई वो थी जन-हानि. अमेरिका का नागासाकी और हिरोशिमा पर परमाणु बम गिराने को मानव सभ्यता के इतिहास सबसे क्रूर, विनाशकारी और दर्दनाक घटना माना गया हैं. जिसका परिणाम कई पीढ़िया भुगत चुकी हैं और कई भुगतने वाली हैं, इस कारण इसके बाद इस पर पूरी तरह रोक लगाई गयी. लेकिन फिर भी युद्ध के दौरान कुल 12 मिलियन जवानों को मार गिराया गया, जबकि 25 मिलियन नागरिक भूख, बिमारी इत्यादि कारणों से मारे गये. 24 ,मिलियन लोग इस युद्ध में घायल और विकलांग हुए. यूएस द्वारा जापान में बम गिराने के कारण 160,000 जन-हानि हुयी. इस तरह दूसरा विश्व युद्ध हर दृष्टि से मानव जाति के लिए भयंकर विनाशकारी युद्ध सिद्ध हुआ.

- द्वितीय विश्वयुद्ध में प्रथम विश्वयुद्ध की तुलना में धन-जन की अधिक क्षति हुई। एक अनुमान के अनुसार, इस युद्ध में दोनों पक्षों के 5 करोड़ से अधिक लोग मारे गए जिनमें सर्वाधिक संख्या सोवियतों की थी। लाखों बेघर हो गए। इससे पुनर्वास की समस्या उठ खड़ी हुई। लाखों यहूदियों की हत्या कर दी गई। घायलों की गिनती ही नहीं की जा सकती थी। परमाणु बम से हिरोशिमा और नागासाकी पूरी तरह नष्ट हो गए। इसी प्रकार युद्ध में बेहिसाब संपत्ति भी नष्ट हुई। अनुमान था सिर्फ इंग्लैंड में करीब 2000 करोड़ रुपए मूल्य की संपत्ति नष्ट हुई। सोवियत संघ की संपूर्ण राष्ट्रीय संपत्ति का चौथा भाग युद्ध की भेंट चढ़ गया। इतना विनाशकारी युद्ध पहले कभी नहीं हुआ था।

- हालांकि दूसरे विश्व युद्ध के समय हताहत आम-जनों की वास्तविक संख्या कभी नहीं जानी जा सकती. इनमें बहुत सी मौतें तो बम ब्लास्ट, नर-संहार, भूख और युद्ध से जुडी अन्य गतिविधियों के कारण हुयी थी. हिटलर के दैविक "अंतिम समाधान" के हिस्से के रूप में नाजी एकाग्रता शिविरों में अनुमानित 45-60 मिलियन लोगों की हत्या में 6 मिलियन यहूदी मारे गए थे, जिन्हें अब होलोकॉस्ट के नाम से जाना जाता है. जबकि सोवियत यूनियन के 7 मिलियन सैनिक घायल हुए थे.
- ये माना जाता हैं कि युद्ध के दौरान लगभग 6 मिलीयन यहूदी तो नाज़ी कंसंट्रेशन कैंप में ही मारे गये थे. और रोम के हजारों लोगों की हत्या कर दी गयी थी, जिनमें मानसिक और शारीरिक रूप से असक्षम लोग भी शामिल थे.

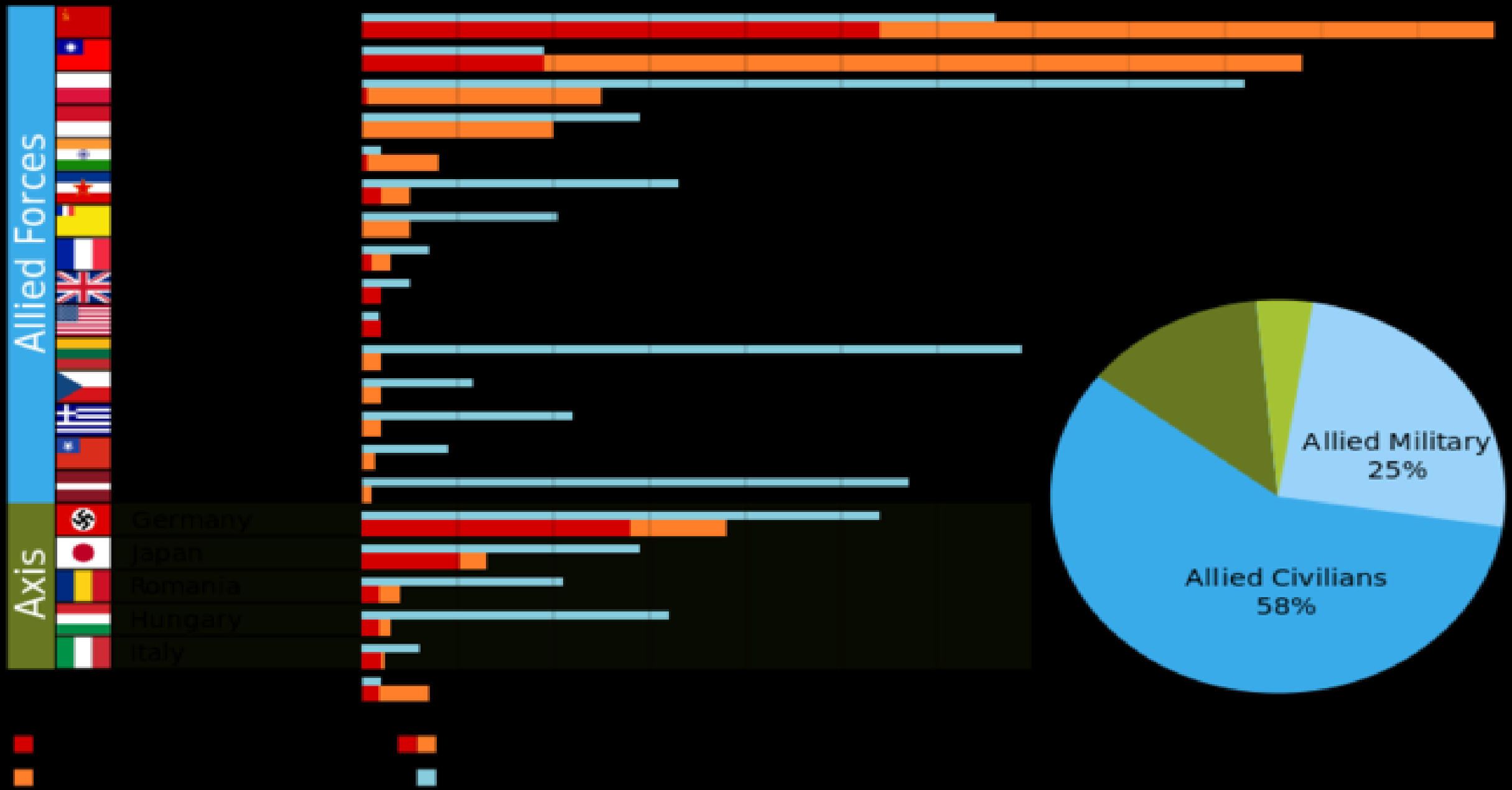
Allied Forces
Axis
Germany
Japan
Romania
Hungary
Italy
Allied Military
25%
Allied Civilians
58%

औपनिवेशिक युग का अंत

- द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद सभी साम्राज्यवादी राज्यों को एक-एक कर अपनी उपनिवेशों से हाथ धोना पड़ा। उपनिवेशों में राष्ट्रीयता की लहर तेज हो गई। स्वतंत्रता आंदोलन तेज हो गए। फलतः एशिया के अनेक देश यूरोपीय दासता से मुक्त हो गए। यूरोपीय राष्ट्रों की शक्ति और साधन इतने कमजोर हो गए कि वह उपनिवेशों पर अपना कब्जा जमाए रखने में सक्षम नहीं र।हे इसलिए वर्मा, मलाया इत्यादि स्वतंत्र हो गए। 1947 में भारत भी अंग्रेजी दासता से मुक्त हो गया।

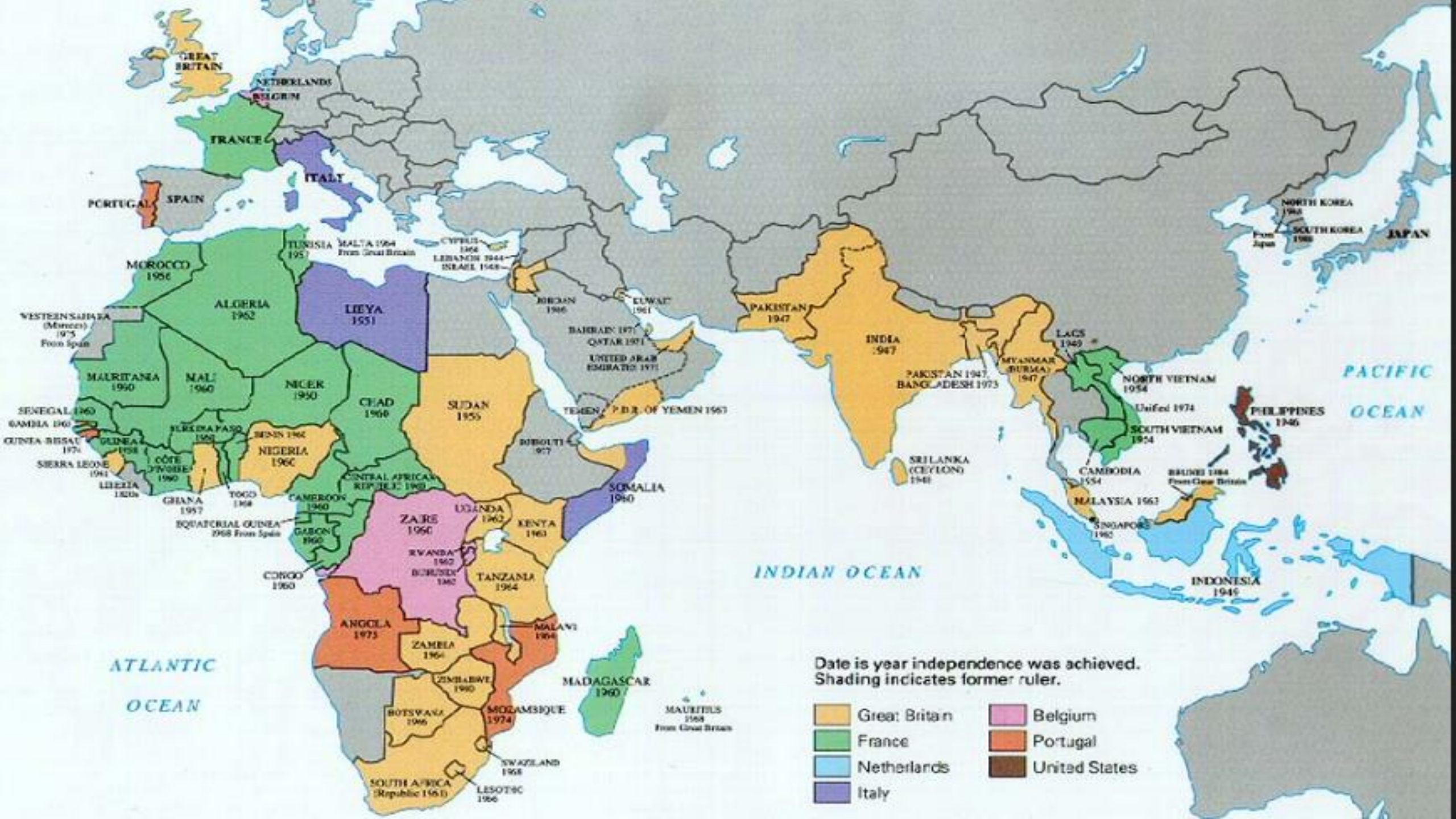
GREAT BRITAIN
NETHERLANDS
BELGIUM
FRANCE
ITALY
PORTUGAL
SPAIN
TUNISIA 1956
MALTA 1964 From Great Britain
CYPRUS 1960
LEBANON 1944
ISRAEL 1948
MOROCCO 1956
ALGERIA 1962
LIBYA 1951
JORDAN 1946
KUWAIT 1961
BAHRAIN 1971
QATAR 1971
UNITED ARAB EMIRATES 1971
PAKISTAN 1947
INDIA 1947
PAKISTAN 1947, BANGLADESH 1973
MYANMAR (BURMA) 1947
LAOS 1949
NORTH KOREA 1948
From Japan
SOUTH KOREA 1948
JAPAN
NORTH VIETNAM 1954
Unified 1974
SOUTH VIETNAM 1954
PHILIPPINES 1946
PACIFIC OCEAN
WESTERN SAHARA (Morocco) 1975 From Spain
MAURITANIA 1960
MALI 1960
NIGER 1960
CHAD 1960
SUDAN 1955
YEMEN
P.D.R. OF YEMEN 1967
DJIBOUTI 1977
SOMALIA 1960
SENEGAL 1960
GAMBIA 1965
GUINEA-BISSAU 1974
GUINEA 1958
SIERRA LEONE 1961
LIBERIA 1820s
BURKINA FASO 1960
BENIN 1960
NIGERIA 1960
CÔTE D'IVOIRE 1960
GHANA 1957
TOGO 1960
CENTRAL AFRICAN REPUBLIC 1960
CAMEROON 1960
EQUATORIAL GUINEA 1968 From Spain
GABON 1960
CONGO 1960
ZAIRE 1960
UGANDA 1962
KENYA 1963
RWANDA 1962
BURUNDI 1962
TANZANIA 1964
SRI LANKA (CEYLON) 1948
CAMBODIA 1954
BRUNEI 1984 From Great Britain
MALAYSIA 1963
SINGAPORE 1965
INDONESIA 1949
INDIAN OCEAN
ANGOLA 1975
ZAMBIA 1964
MALAWI 1964
ZIMBABWE 1980
BOTSWANA 1966
MOZAMBIQUE 1974
MADAGASCAR 1960
MAURITIUS 1968 From Great Britain
SWAZILAND 1968
SOUTH AFRICA (Republic 1961)
LESOTHO 1966
ATLANTIC OCEAN
Date is year independence was achieved.
Shading indicates former ruler.
Great Britain
France
Netherlands
Italy
Belgium
Portugal
United States

फासीवादी शक्तियों का सफाया

- युद्ध में पराजित होने के बाद धुरी राष्ट्रों के दुर्दिन आ गए। जर्मन साम्राज्य का बड़ा भाग उससे छिन गया। इटली को भी अपने सभी अफ्रीकी उपनिवेश खोने पड़े। जापान को भी उन क्षेलों को वापस करना पड़ा जिन पर वह अपना अधिकार जमाए हुए था। इन राष्ट्रों की आर्थिक सैनिक स्थिति भी दयनीय हो गई।

- बेशक विकसित देशों से तानाशाही का खात्मा हो गया। परंतु ध्यान देनेवाली बात यह है कि नवोदित-नव स्वतंत्र कई देशों में तानाशाही की स्थापना हुई। अधिकांश कम्युनिस्ट देशों में तानाशाही सरकारें आईं। जिन देशों ने कथित तौर पर लोकतन्त्र की स्थापना के लिए जंग-ए-आजादी का नारा बुलंद किया, वहाँ भी तानाशाही सरकारें ही आयीं। इनमें एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिकी देश शामिल थे।

इंग्लैंड की स्थिति का कमजोर पड़ना

- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूं तो ब्रिटेन विजेता राष्ट्रों की श्रेणी में खड़ा था, पर उसे अपनी जीत पर गर्व से ज्यादा खीझ आ रहा था। विश्व शक्ति से ब्रिटेन क्षीण शक्ति की स्थिति में आ चुका था। लंदन की एक भी बिल्डिग ऐसी नहीं थी तो जर्मन बमबारी से पूरी तरह महफूज बची थी। अंग्रेजों के सामने इंग्लैंड को फिर से खड़ा करने और उपनिवेशों को आजाद कर देने-यही दो विकल्प बचे थे। बड़ी बुद्धिमानी का परिचय देते हुए उन्होंने अपने देश के नवनिर्माण का फैसला किया। पर अफसोस इस निर्णय के बाद ब्रिटेन अपनी पुरानी स्थिति को कभी वापस न पा सका।

टूटे-फूटे घरों और भूमिगात ट्रेनों के स्टेशनों पर आश्रय लेने के लिए मजबूर अंग्रेज़

जर्मन बमबारी ने लंदन के किसी भी घर को साबूत नहीं रहने दिया था।

जर्मन बमबारी में तबाह लंदन का सेंट पॉल गिरजाघर

कभी आधी से भी ज्यादा दुनिया पर राज करने वाले अंग्रेज़ रोटी, कपड़ा और मकान-तक के लिए मोहताज हो गए थे।

सोवियत संघ और अमेरिका की शक्ति में वृद्धि

- द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात जर्मनी, इटली, इंग्लैंड और फ्रांस के स्थान पर सोवियत संघ और अमेरिका का प्रभाव विश्व राजनीति में बढ़ गया। इन्हीं दोनों देशों के इर्द-गिर्द युद्धोत्तर राजनीतिक घूमने लगी।

विश्व का दो खेमो में विभाजन और शीत युद्ध

- द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात अमेरिका और सोवियत संघ विश्व के 2 महान शक्तिशाली देश बन गए। अमेरिका पूंजीवाद और सोवियत संघ साम्यवाद का समर्थक था। यद्यपि सोवियत संघ को युद्ध में अपार क्षति हुई थी तथापि उसने शीघ्र ही अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ कर ली। अमेरिका की स्थिति पहले से ही मजबूत थी। अतः यूरोपिय और एशियाई देश सहायता के लिए सोवियत संघ एवं अमेरिका की ओर आकृष्ट हुए। दोनों ने और विकसित और विकासशील देशों को अपने प्रभाव में लेना आरंभ कर दिया। फलतः विश्व के राष्ट्र दो खेमों में बंट गए। पूर्वी यूरोप चीन और दक्षिण पूर्व एशिया के राष्ट्र सोवियत संघ के प्रभाव में आए। इसी प्रकार पश्चिमी यूरोप और एशिया के कुछ राष्ट्र पूंजीवादी व्यवस्था के समर्थक बनकर अमेरिका के प्रभाव में चले गए। सोवियत संघ और अमेरिका दोनो अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने में लग गए। इससे शीत युद्ध आरंभ हुआ इसकी समाप्ति सोवियत संघ के विघटन के बाद ही हुई ।

Finland
Norway
Sweden
Soviet Union
Denmark
Netherlands
UK
Poland
east
germany
Belgium
Luxembourg
west
germany
Czechoslovakia
France
Switzerland
Austria
Hungary
Romania
Italy
Yugoslavia
Bulgaria
Portugal
Spain
Albania
Greece

गुटनिरपेक्षता की नीति

- इन दो खेमों में जाने की अपेक्षा कुछ एशियाई ,अफ्रीकी और लैटिन अमेरिकी देशों ने अपनी स्वतंत्र स्थिति बनाए रखने का प्रयास किया। इसी प्रकार विश्व राजनीति में एक तीसरी शक्ति के रूप में असंलग्न राष्ट्रों का उदय हुआ। गुटनिरपेक्ष आंदोलन का तेजी से प्रसार हुआ। इस आंदोलन में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

साम्यवाद का तेजी से प्रसार

- द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात सोवियत संघ के नेतृत्व में साम्यवाद का तेजी से प्रसार हुआ। पूर्वी यूरोप के अनेक देशों एशियाई देशों चीन। उत्तर कोरिया इत्यादि देशों में साम्यवाद का प्रसार हुआ। साम्यवाद के प्रसार से फासीवादी और साम्राज्यवादी शक्तियों की कमर टूट गई। वह पुनः सिर उठाने लायक नहीं रहे।

जर्मनी का विघटन

- द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद जर्मनी को दो भागों में विभक्त कर दिया गया। पश्चिमी जर्मनी और पूर्वी जर्मनी। पश्चिमी जर्मनी को इंग्लैंड अमेरिका और फ्रांस तथा पूर्वी जर्मनी को सोवियत संघ के संरक्षण में रखा गया। बर्लिन की दीवार बनाकर इसका विभाजन किया गया। विगत वर्षों में जर्मनी का पुनः एकीकरण कर बर्लिन की दीवार तोड़ दी गई है तथा जर्मनी पर से विदेशी आधिपत्य समाप्त कर दिया गया है।

वैज्ञानिक प्रगति

- द्वितीय विश्वयुद्ध में वैज्ञानिक खोजों में प्रगति हुई। कुछ वैज्ञानिक आविष्कार तो मानव सभ्यता के लिए लाभदायक थे, परंतु कुछ के घातक परिणाम भी हुए ।प्राकृतिक रबर के स्थान पर कृत्रिम रबर का विकास किया गया। संक्रामक बीमारियों से रक्षा के नए उपाय खोजे गए। अमेरिका में पेनिसिलिन का उत्पादन बड़े पैमाने पर हुआ।रक्त के प्लाज्मा निकालने की विधि खोजी गई जिससे घाव से होने वाली मृत्यु की संख्या में कमी आई। इसी प्रकार युद्ध के लिए बमवर्षक विमानों, जेट इंजन एवं रॉकेट का निर्माण किया गया। रेडार का भी विकास किया गया। सबसे महत्वपूर्ण था परमाणु बम का निर्माण, जिसका उपयोग अमेरिका ने जापान के विरुद्ध किया। युद्ध की समाप्ति के बाद परमाण्विक हथियारों के निर्माण की दौड़ विश्व में आरंभ हो गई है। इससे विश्व युद्ध का खतरा पुनः बज गया है।

Thanks to PENICILLIN
...He Will Come Home!
पेंसिलिन दवाई

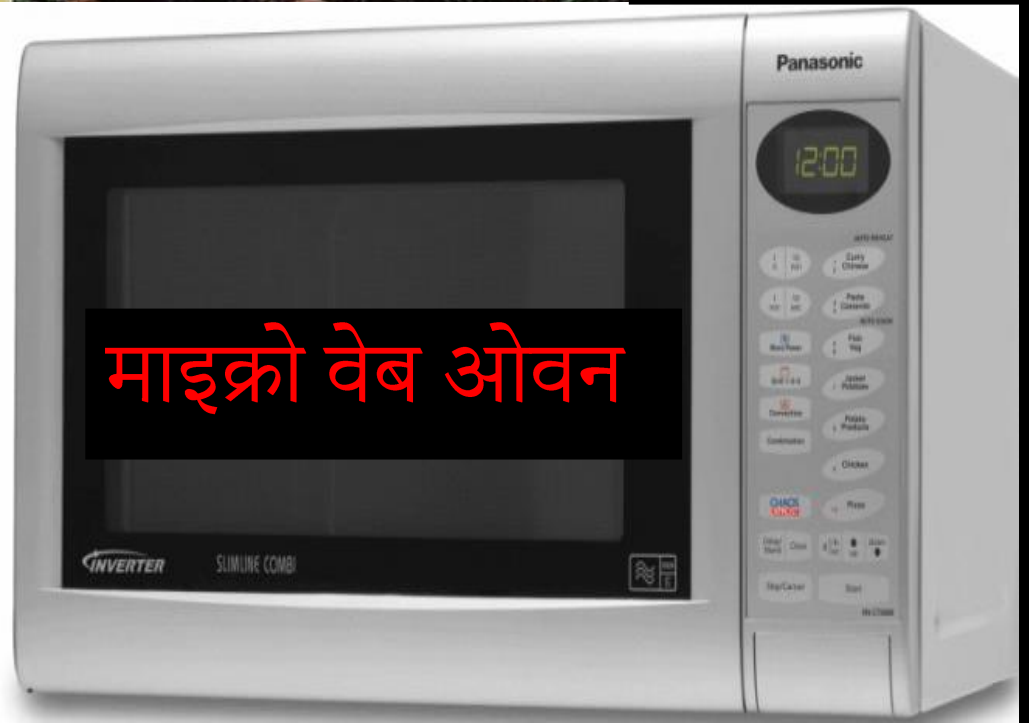

B-2 बमवर्षक

Panasonic
12:00
INVERTER
SLIMLINE COMBI
माइक्रो वेब ओवन

बिना बाहरी पंखे वाले
जेट यात्री जहाज

अगर बमवर्षक विमानों ने लड़ाई के तरीके को बदला तो राडारों (अंग्रेजों-जर्मनों) ने उनकी अवस्थिति का उदघाटन कर दिया।

GPS System ने पूरी पृथ्वी पर किसी वस्तु या जीव की अवस्थिति को आसान कर दिया

नाभिकीय
विस्फोट ने
इंसान के हाथों
में निर्माण और
विनाश-दोनों की
अजस्र शक्ति दे
दी।

Colossus (Below) was the first computer ever built and currently has a working replica at Bletchley Park (Above)

संयुक्त राष्ट्र की स्थापना

- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन की आवश्यकता पुनः प्रतीत हुई, जिससे कि विश्व शांति बनाए रखी जा सके एवं विश्व युद्ध की पुनरावृति को रोका जा सके। अमेरिका के पहल पर 24 अक्टूबर 1945 को संयुक्त राष्ट्र नामक संघ की स्थापना हुई। यस सही है कि राष्ट्र संघ की कब्र पर इसका गठन हुआ, परंतु राष्ट्र संघ की गलतियों से इसे पूरी तरह बचाया गाया। अमरीका समेत विश्व के प्रमुख पाँच देश-सोवियत रूस, फ्रांस ,ब्रिटेन और चीन-इसके संरक्षक बने और उन्हें वीटो का अधिकार दिया गया। इसकी सैन्य शक्ति और वितते शक्ति बहुत ज्यादा थी। इसके राजस्व की भी बेहतर व्यवस्था थी। इसने उन मुद्दों के समाधान के बेहतर प्रयास किए जिनके परिणामस्वरूप युद्ध जन्म लेते हैं। इसने कई देशों को आजादी हासिल करने में सहायता की है। वैश्विक भूख, महामारी और निरक्षरता को समाप्त करने में इसकी सराहनीय भूमिका रही है। अंत:-सांस्कृतिक सम्बन्धों को इसने मजबूत किया है। अभी तक तृतीय विश्वयुद्ध की कोई संभावना नहीं दीख रही, यही इसकी सफलता कही जाएगी।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद बने संयुक्त राष्ट्र संघ के रूप में आज हमारे पास ऐसा संस्थान है जो वैश्विक मुद्दों के शांतिपूर्ण समाधान की गारंटी है। अभी तक तृतीय विश्वयुद्ध की कोई संभावना नहीं दीख रही, यही इसकी सफलता कही जाएगी।

तृतीय विश्वयुद्ध की चेतावनी

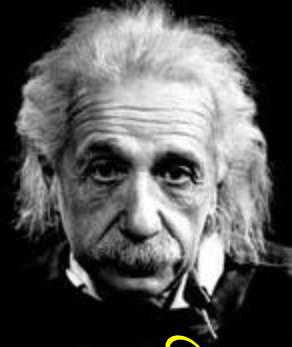

दूसरे विश्वयुद्ध की व्यापक विभीषिका में मानवजाति को शांति के साथ जीने की सीख निहित है। इसमें संदेश छुपा था कि अगर हम साथ जी नहीं सकते हैं तो साथ में मरने के लिए अभिशप्त है। आगामी विशाव युद्ध की एक चेतावनी हमें महानतम वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन के उस कथन में भी मिलती है जिनमें उन्होंने एक पत्रकार के इस प्रश्न "तीसरा महायुद्ध किस हथियार से लड़ा जाएगा" के प्रत्युत्तर में कहा था, " मैं तीसरे विश्व युद्ध के बारे में तो नहीं कह सकता पर चौथा युद्ध बेशक डंडे और पत्थर से लड़ा जाएगा।"("**I know not with what weapons World War III will be fought, but World War IV will be fought with sticks and stones.**")इस उत्तर में यह नसीहत निहित है कि तीसरा महायुद्ध इतना विनाशक होगा कि मानव-सभ्यता ही समाप्त हो जाएगी। यह संदेश मानव-जाति के अस्तित्व से जुड़ा है।

SUGGESTED READINGS:

- 1. F.LEE BENNS — EUROPE SINCE 1914
- 2. A.J.P. TAYLOR — ORIGINS OF THE SECOND WORLD WAR
- 3. E.M.BARNS — WESTERN CIVILIZATION (VOL-III)
- 4. E.H. CARR — INTERNATIONAL RELATIONS BETWEEN THE WORLD WARS-1919-1939
- 5. NORMAN LOWE — MASTERING MODERN WORLD HISTORY
- 6. G.M.S. HARDY — SHORT HISTORY OF INTERNATIONAL AFFAIRS 1920-1939
- 7. S.N. DHAR — INTERNATIONAL RELATIONS & WORLD POLITICS SINCE 19119
- 8. PARTHA SARTHI GUPTA — EUROPE KA ITIHAS, BHAG-II
- 9. LAL BAHADUR VERMA — EUROPE KA ITIHAS, BHAG-II
- 10. DEVENDRA SINGH CHAUHAN — SAMKALEEN EUROPE, BHAG-II
- 11. C. WOODROFF — MODERN WORLD
- 12. M. MARRIOT — INTERNATIONAL RELATIONS BETWEEN THE TWO WORLD WARS